जनपद चम्पावत

एस.एल.डी.पी. माड्यूल क्रमांक–4

शीर्षक :– विद्यालयी वातावरण को सहज बनाने हेतु आनन्दम् गतिविधियों के संचालन में प्रधानाध्यापक का नेतृत्व – उत्तराखण्ड के परिप्रेक्ष्य में।

माड्यूल के क्षेत्रः–

1– नवाचार सम्बन्धी कौशल।

2– शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का रूपान्तरण।

की–वर्ड्सः सहज विद्यालयी वातावरण, आनन्दम् गतिविधि (हैप्पी क्लासरूम)

उद्देश्य –

माड्यूल के अध्ययन के पश्चात् प्रधानाध्यापक निम्नांकित पर अपनी समझ विकसित कर सकेंगे –

1– छात्रों के सर्वांगीण विकास हेतु आनन्दम् गतिविधियों का महत्व समझ सकेंगे।

2– विद्यालय प्रमुख अपने विद्यालय की पाठ्यचर्या में आनन्दम् गतिविधियों को सफलतापूर्वक संचालित करवा सकेंगे।

3– विद्यालय प्रमुख छात्र–छात्राओं हेतु आनन्दमयी विद्यालय वातावरण के सृजन एवं उनमें मानवीय मूल्यों का विकास करने हेतु प्रभावी कार्ययोजना तैयार कर सकेंगे।

प्रस्तावनाः–

शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में आनन्दानुभूति का महत्व– आनन्द की कोई स्थूल आकृति नहीं होती है। आनन्द की मात्र अनुभूति होती है। जीवन में जब हम किसी कार्य को सम्पादित करते हैं, तो उस कार्य में कुछ क्षण आनन्ददायक हो सकते हैं। यह भी आवश्यक नहीं है कि आनन्द की अनुभूति समान रूप से ही हो। जब सम्पन्न वर्ग का कोई व्यक्ति किसी निरीह पशु का शिकार करता है तो उसके द्वारा किये गये आखेट से उस व्यक्ति को आनन्द की अनुभूति होती है लेकिन सभी को शिकार करने में आनन्द मिले यह जरूरी नहीं है।

प्रत्येक व्यक्ति को अलग–अलग गतिविधियों में आनन्द की प्राप्ति होती है। ऐसा भी हो सकता है कि किसी व्यक्ति को किसी कार्य को करने में आनन्द की अनुभूति हो और दूसरे व्यक्ति को उसी कार्य में नकारात्मकता का अनुभव हो। संक्षेप में हम कह सकते हैं कि आनन्द एक अनुभूति है, जो स्थान, समय एवं व्यक्ति विशेष की मनोस्थिति पर निर्भर करती है। किसी के सिर में दर्द हो रहा है, तो उस समय उसे किसी भी प्रकार का संगीत आनन्द नहीं दे सकता है।

अतः हम कह सकते हैं कि जिस प्रकार आनन्द को देखने एवं परखने का कोई निश्चित माप नहीं होता, उसी प्रकार आनन्ददायी शिक्षण की भी केवल अनुभूति की जा सकती है। उसका मात्र अनुभव हो सकता है। आनन्ददायी शिक्षण को भी किसी निश्चित परिभाषा अथवा दायरे में नहीं बाँधा जा सकता। आनन्ददायी शिक्षण अधिगम को भी किसी निश्चित परिभाषा एवं दायरे में नहीं बॉधा जा सकता।

- आनन्ददायी शिक्षण अधिगम एक स्वच्छन्द परिस्थिति अथवा माहौल है।
- इसकी कोई निश्चित विधा नहीं है और न ही यह स्वयं कोई विधा है। : *(अमीर अहमद 'सुमन')*

गीजू भाई बच्चों के मूड के अनुसार चलते थे अर्थात बच्चों की रूचि एवं पसन्द को अधिक तरजीह देते थे। बच्चों के नकारात्मक मूड को पहले सकारात्मक बनाने पर विश्वास करते थे। उनका मानना था कि बच्चे जब जिस विधा से सीखना चाहें उसके अनुसार सिखाने वाले को ढलने की समझ होनी चाहिए। **जॉन डीवी** ने कहा था कि "हम घोड़े को नदी तक जाने के लिये बाध्य कर सकते हैं, लेकिन उसे नदी का पानी पीने के लिये बाध्य नहीं कर सकते हैं।" इसी प्रकार हम बच्चों को कक्षा में बैठने के लिये बाध्य कर सकते हैं, परन्तु उन्हें सीखने के लिये बाध्य नहीं कर सकते हैं। वह तभी सीखेगा जब सीखना चाहेगा, तभी सीखेगा जब उसकी रूचि होगी और रूचि जगाने के लिये या पैदा करने के लिये माहौल बनाना जरूरी है।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा–2005 की सिफारिशों में यह सुझाव दिया गया है कि शिक्षा बोझ रहित हो तथा विद्यालय आनन्दालय बनें। विद्यालय का वातावरण भयमुक्त होना चाहिए ताकि छात्र एक स्वतंत्र वातावरण में पूर्ण रूप से विकास कर सकें। भयमुक्त एवं आन्नदमयी वातावरण में शिक्षण कार्य अधिक सुगमता से होता है। तथा इस प्रक्रिया में विद्यार्थियों का अधिगम स्थाई होता है। **"करके सीखने"** तथा **"खेल खेल में सीखने"** से छात्रों का विषय के प्रति लगाव बना रहता है। **राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020** के अध्याय चार के **बिन्दु 4.26** में उल्लेख किया गया है कि कक्षा 6 से 8 तक के छात्र स्थानीय समुदायों द्वारा तय किये गये और स्थानीय कुशल आवश्यकताओं द्वारा मैपिंग के अनुसार एक आनंददायी कोर्स करेगें। **बिन्दु 4.28** में बच्चों को पंचतंत्र की मूल कहानियों, जातक, हितोपदेश और अन्य मजेदार दंतकथाओं और भारतीय परम्परा से प्रेरक कहानियों को पढ़ने और सीखने के अवसर प्रदान करने का उल्लेख किया गया है।

नैनीताल के प्रसिद्ध जनकवि श्री गिरीश चन्द्र तिवारी "गिर्दा" निम्न पंक्तियां एक आदर्श शिक्षा प्रणाली का बेहतरीन चित्र खींचती है–

"ऐसा हो स्कूल हमारा"

जहॉ न बस्ता कन्धा तोड़े,

जहॉ न पटरी माथा फोड़े,

जहॉ न अक्षर कान उखाड़े,

जहॉ न भाषा जख्म उभारें, ऐसा हो स्कूल हमारा

जहॉ अंक सच सच बतलाएँ,

जहॉ प्रश्न हल तक पहुॅचाए,

जहॉ किताबें निर्भय बोलें,

मन के पन्ने पन्ने खोलें, ऐसा हो स्कूल हमारा

जहॉ न कोई बात छुपाये,

जहॉ न कोई दर्द दुखाये,

जहॉ फूल स्वाभाविक महकें,

जहॉ बालपन जीभर चहकें, ऐसा हो स्कूल हमारा

: **गिरीश चन्द्र तिवारी "गिर्दा"**

बच्चों को रूचिपूर्ण तरीके से शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में सम्मिलित करने के लिए विद्यालयों में सहज वातावरण का निर्माण **''आनन्दम् गतिविधियों''** के माध्यम से संचालित करने का शिक्षा विभाग उत्तराखण्ड द्वारा किया गया प्रयास सराहनीय है। विद्यालयों में सीखने–सिखाने का ऐसा वातावरण तैयार करने की आवश्यकता है, जिसमें बच्चे स्वयं की भावाभिव्यक्ति सहज रूप में कर सकें और विभिन्न शैक्षिक एवं पाठ्य सहगामी गतिविधियों में सम्मिलित होने हेतु प्रेरित हो सकें।

आनन्दम् गतिविधि (एक सिंहावलोकन):–

उत्तराखण्ड राज्य में 14 नवम्बर 2019 से कक्षा 1 से कक्षा 8 तक के विद्यार्थियों हेतु दिल्ली सरकार के शिक्षा विभाग द्वारा प्रायोजित कार्यक्रम "Happyness Classes" की तरह **''आनन्दम् कार्यक्रम''** का शुभारम्भ किया गया। इस कार्यक्रम के तहत सभी चरणों में प्रयोग आधारित अधिगम को अपनाने पर जोर दिया गया है, जिसमें अन्य पाठ्यसहगामी क्रियाकलापों के अतिरिक्त स्वयं करके सीखना और प्रत्येक विषय में कला एवं खेल को एकीकृत किया जाय। कहानी आधारित शिक्षण शास्त्र को प्रत्येक विषय में एक मानक शिक्षणशास्त्र के तौर पर अपनाया गया।

आनन्दम् कार्यक्रम के चार प्रमुख स्तम्भ हैं–

1– ध्यान देने की प्रक्रिया (Mind-fulness)

2– कहानी (Story)

3– गतिविधि (Activity)

4– अभिव्यक्ति (Expression)

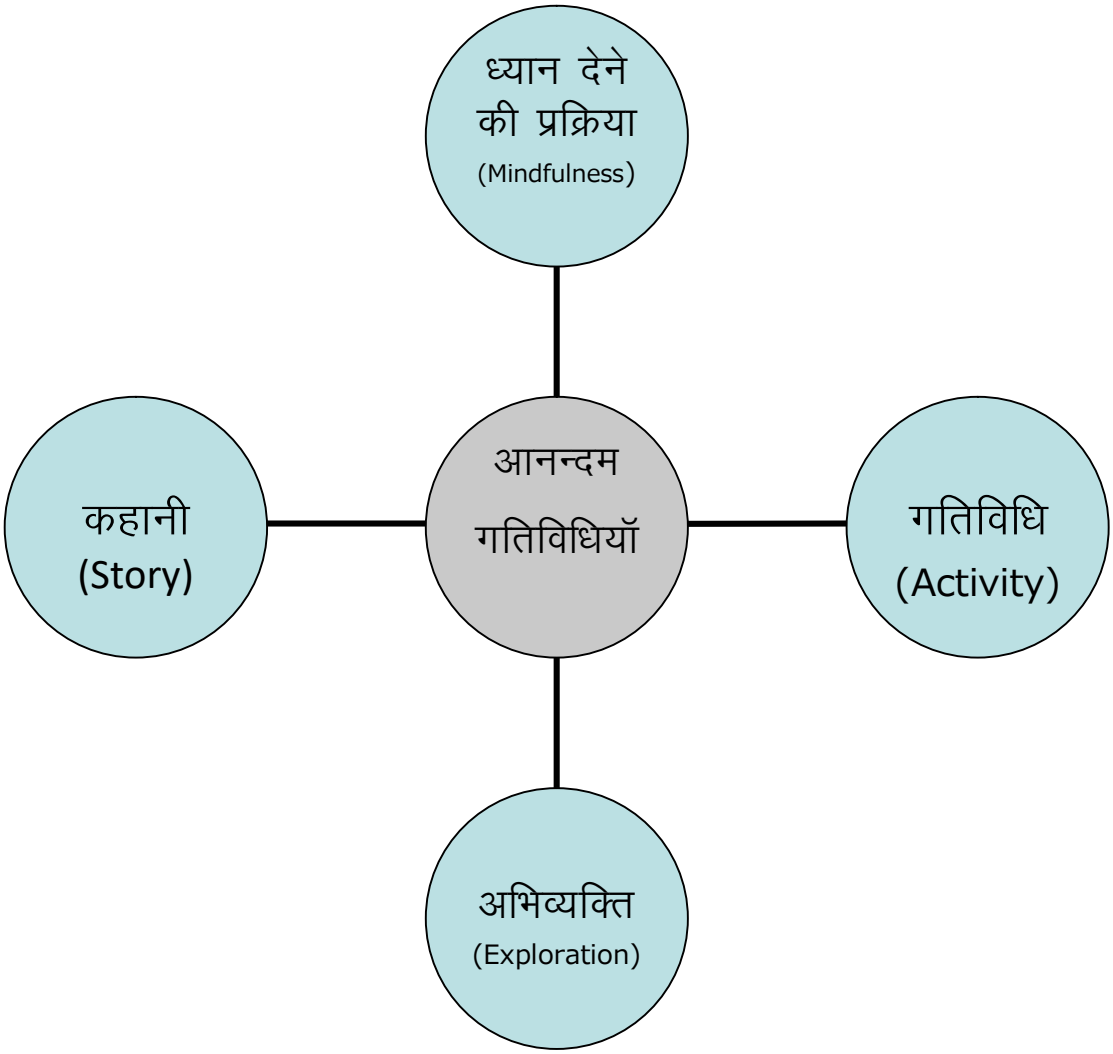

ध्यान देने की प्रक्रिया का उद्देश्य बच्चों में एकाग्रता के साथ अपने आसपास के वातावरण, विचारों, भावनाओं तथा संवेदनाओं के प्रति सजगता विकसित करना है, ताकि वह सोच विचार कर सही प्रतिक्रिया देने का निर्णय ले सके। कहानी का उद्देश्य बच्चों को सोचने समझने हेतु प्रेरित करना है तथा उसकी तार्किकता एवं सृजननात्मकता का विकास करना है। इस कार्यक्रम के माध्यम से बच्चों को विद्यालय में आनन्दमय वातावरण प्रदान करने हेतु विभिन्न गतिविधियों द्वारा उनकी समझ विकसित करने का प्रयास है।

अभिव्यक्ति प्रक्रिया का उद्देश्य बच्चों के विचारों को मंच प्रदान करना है, ताकि उनकी अन्तर्निहित योग्यताओं को सँवारा जा सके और उनका सर्वांगीण विकास हो सके। **दीवार पत्रिका, मन की बात, बॉक्स फाइल, कहानी सुनाना** इत्यादि गतिविधियों के माध्यम से बच्चों में अन्तर्निहित योग्यताओं को उभारने में मदद मिलती है। आनन्दम् पाठ्यचर्या के निर्माण में एन0सी0ई0आर0टी0 दिल्ली तथा स्वयंसेवी संस्थाओं **जैसे– ड्रीम, लभ्या फाउण्डेशन एवं ब्लू आर्च फाउण्डेशन** का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ है। उत्तराखण्ड शिक्षा विभाग द्वारा लागू किया **''आनन्दम् कार्यक्रम''** कक्षा 1 से 2, 3 से 5 एवं कक्षा 6 से 8 तीन श्रेणियों में विभक्त है। कक्षा 1 व 2 के लिए उपरोक्त चार गतिविधियों में से तीन (अभिव्यक्ति को छोड़कर) पर एवं कक्षा 3 से 8 तक समस्त चारों गतिविधियों में प्रत्येक विद्यालयी कार्यदिवस में पहले वादन से पूर्व निर्धारित शून्य वादन (अवधि अधिकतम 35 मिनट) में **''आनन्दम् कार्यक्रम''** आयोजित किया जाता है। यह अपेक्षा की जाती है कि विद्यालय प्रमुख समय सारणी के निर्माण के समय इसका अनुपालन सुनिश्चित करते हैं।

शून्य वादन के दौरान उत्तराखण्ड राज्य के विद्यालयों में आयोजित आनन्दम गतिविधियों की कुछ झलकियाँ

आनन्दम् कार्यक्रम का दिवसवार साप्ताहिक रोस्टरः–

सम्पूर्ण राज्य में कक्षा 1 से 8 तक विद्यालयों में निम्नांकित विवरणानुसार आनन्दम् गतिविधियॉ आयोजित की जाती हैं।

दिवस	कक्षावार गतिविधियॉ			अवधि (30–35 मिनट)
	कक्षा 1 व 2	कक्षा 3 से 5	कक्षा 6 से 8	
सोमवार	ध्यान देने की प्रक्रिया (Mindfulness)	ध्यान देने की प्रक्रिया (Mindfulness)	ध्यान देने की प्रक्रिया (Mindfulness)	शून्य वादन
मंगलवार	कहानी (Story)	कहानी (Story)	कहानी (Story)	शून्य वादन
बुधवार	कहानी (Story)	कहानी (Story)	कहानी (Story)	शून्य वादन
बृहस्पतिवार	गतिविधि (Activity)	गतिविधि (Activity)	गतिविधि (Activity)	शून्य वादन
शुक्रवार	गतिविधि (Activity)	गतिविधि (Activity)	गतिविधि (Activity)	शून्य वादन
शनिवार	-	अभिव्यक्ति (Expression)	अभिव्यक्ति (Expression)	शून्य वादन

एन0सी0एफ0 2005 के बिन्दु 2.3.1 में उल्लेख है कि ''सभी बच्चों का स्वस्थ शारीरिक विकास सभी प्रकार के विकास की पहली शर्त है। इसकी मूल आवश्यकताएँ सन्तुलित आहार, शारीरिक व्यायाम, मनोवैज्ञानिक व्यायाम, जिमनास्टिक, योग तथा प्रर्दशन कला, नृत्य कला आदि हैं। इन दक्षताओं के माध्यम से विद्यार्थी अपने जीवन में उच्च स्तरों को प्राप्त कर सकते हैं। यह ध्यान में रखना आवश्यक है कि जब ध्यान आनन्द से हटकर उपलब्धि पर चला जाय तो तनाव पैदा कर सकता है। इस स्थिति से निजात पाने के लिए आनन्दम् गतिविधि आवश्यक उपकरण के रूप में विकसित हुई है।

आनन्दम् कार्यक्रम के सफलता पूर्वक संचालन से एक अधिगमकर्ता में सामाजिक तथा भावनात्मक विकास, विचारोभिव्यक्ति की क्षमता का विकास, एकाग्रता का विकास तथा आत्मविश्वास का विकास होने के साथ ही व्यक्तित्व का चहुँमुखी विकास होता है।

केस स्टडी –1

राजीव चौथी कक्षा में अध्ययनरत एक प्रतिभाशाली छात्र है। उसके माता पिता दैनिक मजदूरी करते हैं। राजीव जब मात्र आठ वर्ष का था उसके पिता का देहावसान हो गया। तब से राजीव की माताजी उसकी तथा उसकी छोटी बहन संगीता की देख भाल कर रही है। राजीव विषम आर्थिक व पारिवारिक परिस्थितियों का सामना करने के कारण शान्त रहने लगा तथा एक अन्तर्मुखी व्यक्तित्व वाले बालक में बदल गया था। राजीव अपने जीवन की कठिनाइयों तथा व्यक्तिगत परेशानियों की चर्चा अपने अध्यापकों व साथियों से नहीं कर पाता था। उसकी कक्षाध्यापिका सारिका और प्रधानाध्यापक श्री

कृष्णदेव उसके इस व्यवहार में परिवर्तन लाने का निरन्तर प्रयास करते रहे, परन्तु राजीव भावनात्मक रूप से इतना कमजोर हो गया था कि वह बात बात में रोने लगता था। इसी वर्ष उत्तराखण्ड राज्य के एस.सी.ई.आर.टी. द्वारा सम्पूर्ण राज्य के विद्यालयों में कक्षा 1 से 8 तक ''आनन्दम कार्यक्रम'' लागू किये जाने का निर्णय लिया गया। चरणबद्ध तरीके से अध्यापकों को ऑनलाइन और ऑफलाइन मोड पर इस हेतु प्रशिक्षित किया गया। प्रथम चरण में प्रधानाध्यापक श्री कृष्णदेव एवं द्वितीय चरण में अध्यापिका सारिका ने उक्त प्रशिक्षण प्राप्त किया। राजीव अब सातवीं कक्षा में था और उसकी मनोस्थिति दिन प्रतिदिन बिगड़ती जा रही थी। वह अक्सर विद्यालय से अनुपस्थित भी रहने लगा था। जैसे ही आनन्दम् गतिविधियों को प्रधानाध्यापक के नेतृत्व में समय सारणी में स्थान मिला। स्वयं श्री प्रधानाध्यापक कृष्णदेव एवं अध्यापिका सारिका नित्य प्रति शून्य वादन में बच्चों के साथ आनन्दम् गतिविधियों में भाग लेते थे। इसी बीच प्रधानाध्यापक द्वारा एस.एम.सी. की एक बैठक आयोजित कर इसमें अभिभावकों को आनन्दम् कार्यक्रम की विस्तारपूर्वक जानकारी प्रदान की। अभिभावकों ने इस कार्यक्रम की मुक्त कंठ से प्रशंसा की एवं अपने पाल्यों को नित्य विद्यालय भेजने की वचनबद्धता की। अन्य बच्चों की भॉति राजीव भी अब रोज विद्यालय आने लगा था।

विद्यालय में आनन्दम् पाठ्यचर्या का संचालन होने बाद राजीव की कक्षाध्यापिका ने उसे विभिन्न गतिविधियों में प्रतिभाग कराया। माइंड–फुलनैस, कहानी, गतिविधि तथा अभिव्यक्ति इत्यादि के चरणों से गुजरने के उपरान्त राजीव का आत्मविश्वास बढ़ने लगा। समूह में साथियों के साथ गतिविधियाँ करने से वह सबसे बातचीत करने लगा। वह कहानियाँ सुनने के बाद कभी–कभी अपने जीवन से जुड़े संस्मरण भी सुनाने लगा। अब वह नित्य आनन्दम् की गतिविधियों में बढ़–चढकर प्रतिभाग करता है, उसका शंकालु स्वभाव चहमुॅखी व्यक्तित्व की ओर बदल रहा है। अपने दोस्तों और सहपाठियों के साथ आनन्दित रहने लगा है साथ ही शिक्षण अधिगम में भी उसका उपलब्धि स्तर बढ़ा है। इस प्रकार आनन्दम् गतिविधि के माध्यम से हम बालक के मनोवैज्ञानिक तथा मनोसामाजिक पक्षों को सँवारकर उसके व्यक्तित्व का चहुँमुखी विकास कर सकते हैं।

चिन्तन प्रश्न–

1– बच्चों में एकाग्रता, सामाजिकता, तथा अभिव्यक्ति के विकास हेतु आप पाठ्यचर्या में कौन–कौन सी गतिविधियाँ सम्मिलित कर सकते हैं ?

.....

.....

.....

.....

2– राजीव जैसे बच्चों की पहचान करने के लिए एक नेतृत्वकर्ता के रूप में आप क्या कर सकते हैं ?

.....

.....

.....

.....

हैप्पी क्लासरूम का निर्माण–

एक सुखद तथा आनन्दमयी कक्षा प्रत्येक क्षिक्षक का स्वप्न होता है। इन गतिविधियों के माध्यम से हम अकादमिक ह्रास से समझौता किये बिना एक कक्षा–कक्ष में प्रसन्नचित्त वातावरण का निर्माण करने के साथ ही शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को प्रभावपूर्ण बना सकते हैं।

एक हैप्पी क्लासरूम को प्राप्त करने हेतु तीन बातों को ध्यान में रखना आवश्यक हैं–

1– विद्यार्थी सुरक्षित महसूस करें– एक कक्षा–कक्ष सुरक्षित हो तथा नियन्त्रण में हो। एक शिक्षक को ऐसी नीतियाँ/प्रक्रियाएँ अपनानी चाहिए ताकि शारीरिक, सामाजिक तथा भावनात्मक सुरक्षा की भावना का विकास हो सके। आप जिस तरह के व्यवहार की अपेक्षा अपने विद्यार्थियों से करते हैं, उसी प्रकार का उदाहरण शिक्षक को अपने व्यवहार से स्थापित करना होगा।

2– छात्र स्वयं का सम्मान करना सीखें– प्रत्येक छात्र को स्वयं व्यक्तिगत रूप से जानने का प्रयास करना चाहिए। यदि एक हैप्पी क्लासरूम देखना चाहते हैं, तो शिक्षक के रूप में आपको छात्रों के साथ एक सकारात्मक तालमेल बनाना चाहिए। यदि कोई छात्र दुर्व्यवहार करता है तो उस छात्र से सार्वजनिक रूप से बात न कर व्यक्तिगत रूप से बात करनी चाहिए। एक बार यदि वह समझ जाए कि आप उसका ध्यान रखते हैं, तो वह आपकी बात अधिक ध्यान से सुनेगा।

3– छात्र सफल महसूस करें– एक शिक्षक के तौर पर आपको वह सब करना चाहिए जो आप अपने छात्र की अकादमिक सफलता के लिए कर सकते हैं। जब–जब आवश्यक हो टैक्नालॉजी का प्रयोग करना चाहिए। असाइनमेंट देते समय स्पष्ट संवाद करना और पश्चपोषण देना चाहिए। इसके साथ ही सफल होने पर उसका उत्सव भी मनाना नहीं भूलना चाहिए।

एक हैप्पी क्लासरूम के निर्माण हेतु सुझाव–

1– अपने छात्रों को जानने का प्रयास करें।

2– आपसी वार्तालाप में हास्य विनोद का प्रयोग करें।

3– छात्रों की वास्तविक प्रशंसा करें।

4– विद्यार्थियों को विभिन्न गतिविधियों में चुनाव करने का अवसर दें।

5– छात्रों को खेलने हेतु निश्चित समय अवश्य प्रदान करें।

6– छात्रों को विभिन्न गतिविधियों के मध्य आवश्यक अन्तराल दें।

7– छात्रों को समूह में रखकर उनका सामाजिक विकास होने दें।

8– विद्यालय में कार्यरत शिक्षकों को प्रत्येक दिन बच्चों के साथ आनन्दम गतिविधियों में प्रतिभाग करने हेतु प्रेरित करें एवं स्वयं भी प्रतिभाग करें।

निम्नांकित वीडियो लिंक से आनन्दम् कार्यक्रम की मनोरंजक गतिविधियों का अवलोकन करते हैं–

1. https://youtu.be/jPITffMj0_w
2. https://youtu.be/NsYSxqWOwZg

केस स्टडी

वर्ष 2018 में रामचन्द्र जी की पदोन्नति उत्तराखण्ड के सुदूर ग्रामीण क्षेत्र के एक उच्च प्राथमिक विद्यालय में प्रधानाध्यापक के पद पर हुई। जब वह प्रथम दिन विद्यालय पहुँचे तो उन्हें लगा कि अब उन्हें मनचाहा विद्यालय और कार्यक्षेत्र मिल गया है, जिसकी वह कल्पना करते थे। विद्यालय सड़क से लगभग 500 मीटर की दूरी पर स्थित था तथा वहाँ पहुँचने के लिए पक्का सीसी मार्ग भी था। विद्यालय में पेयजल, भवन, शौचालय, पुस्तकालय, विद्युतीकरण, कम्प्यूटर, फर्नीचर, खेल मैदान इत्यादि भौतिक संसाधन उपलब्ध थे। वहाँ तीन सहायक अध्यापक पहले से कार्यरत थे। शिक्षण–अधिगम प्रक्रियाओं एवं पाठ्यसहगामी क्रियाकलापों के सम्पादन हेतु विद्यालय पूर्णतः अनुकूल था फिर भी एक बड़ी चुनौती उनके सम्मुख आ खड़ी हुयी थी।

वह चुनौती थी कि विद्यालय में छात्र/छात्राओं की अनियमित एवं न्यून उपस्थिति में कैसे सुधार लाया जाए। छात्र उपस्थिति पंजिका यह दर्शा रही थी कि कुल 69 छात्र/छात्राओं में से 30 से 40 विद्यार्थी ही नियमित उपस्थित रह रहे थे। रामचन्द्र जी ने सर्वप्रथम अभिभावकों से सम्पर्क किया तथा बच्चों की उपस्थिति का कारण जानना चाहा। सबसे प्रमुख बात जो दृष्टिगोचर हो रही थी, वह थी विद्यार्थियों की विद्यालय के प्रति अरूचि। ऐसे में प्रधानाचार्य ने घोषणा की कि सम्पूर्ण माह में जिन बच्चों की उपस्थिति 100 प्रतिशत रहेगी, उन्हें माह के अन्त में पुरष्कृत किया जाएगा। इसके साथ ही उन्होंने प्रत्येक बच्चे से व्यक्तिगत रूप से बातचीत करना प्रारम्भ किया। बच्चों से बातचीत करने पर पता चला कि अधिकांश बच्चे अन्तर्मुखी स्वभाव के थे तथा विभिन्न पारिवारिक प्रतिकूल परिस्थितियों के कारण उनमें आत्मविश्वास की कमी स्पष्ट झलक रही थी।

इसी बीच 14 नवम्बर 2019 को आनन्दम् कार्यक्रम की शुरूआत हुयी। प्रधानाध्यापक ने शिक्षक साथियों के सहयोग से उक्त कार्यक्रम को विद्यालय पाठ्यचर्या में शामिल किया साथ ही सभी बच्चों को इस कार्यक्रम में सम्मिलित होने हेतु प्रेरित किया। इसका परिणाम यह हुआ कि ध्यान देने की प्रक्रिया से बच्चों में एकाग्रता, ध्यानपूर्वक सुनने तथा उचित प्रतिक्रिया देने के गुण विकसित हुए।

गतिविधियों के माध्यम से बच्चों में खेल–खेल में सीखने तथा समूह के साथ साझेदारी में काम करने की योग्यता विकसित होने लगी। जब नियमित उपस्थित होने वाले बच्चों ने विद्यालय में हो रही आनन्दम् की इन गतिविधियों की चर्चा अपने अन्य साथियों से की तो अन्य छात्र भी विद्यालय में नियमित रूप से आने लगे।

अभिव्यक्ति व कहानी के कार्यक्रमों से बच्चों में किसी बात को कहने, किसी विषयवस्तु पर लिखने तथा स्वयं को अभिव्यक्त करने के कौशल विकसित हो गये। विद्यालय की छात्र उपस्थिति निरन्तर बढ़ती रही और अब 90 प्रतिशत से अधिक छात्र उपस्थिति रहने लगी है।

चिन्तन हेतु प्रश्न–

1– बच्चों के व्यक्तित्व विकास में कौन–कौन से कारक बाधक हो सकते हैं, जिन्हें आनन्दम् कार्यक्रम के प्रभावी क्रियान्वयन से दूर किया जा सकता है ?

.....

.....

.....

.....

2– आपकी दृष्टि में बच्चों में कौन–कौन सी व्यक्तिगत भिन्नताएं होती हैं ?

.....

.....

.....

.....

3– आपके विचार से आनन्दम गतिविधियों के नियमित संचालन से बच्चों में कौन–कौन से गुण विकसित हो सकते हैं ?

.....

.....

.....

.....

आनन्ददायी वातावरण के निर्माण में प्रधानाध्यापक की भूमिका–

आनन्ददायी शिक्षण के लिये एक प्रधानाध्यापक शिक्षकों की मदद से एक आनन्दमयी माहौल तैयार करने का प्रयास कर सकते हैं। इन आनन्दमयी परिस्थितियों के लिये वह अनेक विधाओं का सहारा ले सकते हैं। यह विधायें निश्चित नहीं हैं एवं अनेक बातों या आयामों पर निर्भर करती हैं। जैसे–

- व्यक्ति
- समय
- काल
- स्थान
- बालक का स्वास्थ्य
- बालक का परिवेश
- विद्यालय या समुदाय का परिवेश
- प्रधानाध्यापक एवं अध्यापकों की योग्यता एवं व्यवसाय के प्रति दृष्टिकोण
- सकारात्मकता अथवा नकारात्मकता
- बच्चे के सर्वांगीण विकास के प्रति प्रतिबद्धता आदि।

उपर्युक्त सभी बातों पर निर्भर करता है कि माहौल बनाने के लिये कौन सी विधा काम में लायी जाये। इन सब बातों को ध्यान में रखकर प्रधानाध्यापक अध्यापकों के साथ मिलकर शिक्षण कार्य एवं पाठ्यसहगामी गतिविधियों को क्रियान्वित करने का प्रयास करते हैं। यदि शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में छात्र रूचि पूर्वक सहयोग कर रहे हैं, सीखने में उन्हें मजा आ रहा है या पढने अथवा सीखने में आनन्द आ रहा है या आनन्दमयी परिस्थितियों में शिक्षण हो रहा है तो वह शिक्षण ही आनन्ददायी शिक्षण है।

यहॉ कुछ वीडियो लिंक दिये जा रहे हैं जिन्हें 'आनन्दम् गतिविधियों' के उदाहरण स्वरूप संज्ञान में लिया जा सकता है –

ध्यान देने की प्रक्रिया	कहानी	गतिविधि	अभिव्यक्ति
जन्म दिन किसका और कैसे? https://youtu.be/6kfFpBivs5M	चलो बनाऐं पकौड़े https://youtu.be/v0RgJNMU-Rc	शशि आंटी सबसे अच्छी https://youtu.be/SLynf47w8sY	मेरी पसंदीदा जगह https://youtu.be/e991Wc92WCU
Mindfulness recap https://youtu.be/xNU1eMoNxNc	एक गिलास पानी की कीमत https://youtu.be/66SC2sB6JWM	आलू का परॉठा https://youtu.be/df3ReBoVSGs	मैं आपको जानता हूँ। https://youtu.be/2maxcglnMac
Mindful breathing https://youtu.be/n0S0Dc-tcDo	टूटी पेंसिल https://youtu.be/0N-M6bSCCAQ		
याद करें और बताएँ https://youtu.be/lSjBlwXrddk	टमटम का ड्रम https://youtu.be/BHgLCXJNa04		

(आभार : श्रीमती उर्मिला खर्कवाल, अध्यापिका रा.उ.प्रा.वि. कोटअमोड़ी, चम्पावत)

समेकन –

विद्यार्थी जीवन मनुष्य का सबसे महत्वपूर्ण समय होता है। इस समय में अर्जित संस्कार, मानवमूल्य तथा सीखी गयी विधायें हमारा भविष्य निर्धारित करती हैं। प्रत्येक शिक्षक एवं विद्यार्थियों में अनेकों आन्तरिक भाव उत्पन्न होते रहते हैं। संस्था प्रमुख को उन्हें पहचानने के लिए विवेकपूर्वक विचार करना होता है। ध्यान देने पर हम इन भावों को पकड़ पाते हैं। भावनाओं का हमारे आस–पास के वातावरण पर भी असर पड़ता है।

प्रधानाध्यापक विद्यालयों को एक नवाचारी केन्द्र के रूप में स्थापित करने एवं शिक्षा में गुणात्मक सुधार लाने के लिए विद्यालयान्तर्गत समस्त व्यवस्थाओं का नेतृत्व करते हैं। इसीलिए उन्हें एक ''शैक्षणिक नेता'' कहा जाता है। विद्यालयों में शैक्षणिक और विकासात्मक मानकों को बनाए रखने, भयमुक्त एवं आनन्ददायी वातावरण के सृजन तथा समन्वयकारी दृष्टिकोण विकसित करने में प्रधानाध्यापकों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। आधुनिक संकल्पना **''चाइल्ड फ्रैंडली''** वातावरण की पक्षधर है। दिल्ली के

विद्यालयों में संचालित हो रहा **''हैप्पीनैस कार्यक्रम''** हो या फिर उत्तराखण्ड शिक्षा विभाग की पहल पर सम्पूर्ण राज्य के विद्यालयों में लागू किया गया **''आनन्दम् कार्यक्रम''** हो, दोनों ही तीन दशक पूर्व प्रो0 यशपाल की अध्यक्षता में गठित 1993 की बोझरहित शिक्षा के मूलाधार से प्रेरित कार्यक्रम हैं। मूल रूप से इसी संकल्पना पर राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा – 2005 एवं 2020 में जारी नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति के ड्राफ्ट तैयार किये गये हैं।

गत दो दशकों में भारतवर्ष में इस दिशा में अत्यधिक जोर दिया गया है कि **विद्यालय को एक ''आनन्दालय''** के रूप में क्यों विकसित किया जाना चाहिए? संस्था प्रमुख में इस हेतु कौशलों एवं नेतृत्व क्षमता विकसित करना महत्वपूर्ण विचार है। ''आनन्दम गतिविधियों'' को प्रारम्भिक शिक्षा हेतु लागू करने के पीछे यही तर्क है कि बच्चे बाल्यकाल एवं उत्तर बाल्यकाल तक शिक्षा को आनन्द के रूप में और स्कूली गतिविधियों को एक उत्सव के रूप में स्वीकार करें ताकि उनमें एक स्वस्थ शारीरिक, मानसिक, नैतिक एवं सीखने की स्वायत्तता का विकास हो सके।

विद्यालयों में इस कार्यक्रम के प्रभावी संचालन हेतु एक प्रधानाध्यापक में निम्नांकित व्यक्तिगत एवं पेशेवर गुण मददगार सिद्ध हो सकते हैं –

1. आत्मप्रेरण
2. प्रतिबद्धता
3. सकारात्मक दृष्टिकोण
4. लचीलापन
5. स्व–विश्लेषण/आत्म–मूल्यांकन
6. नवाचारिकता
7. हितधारकों से समन्वयन
8. कुशल परामर्शदाता
9. धैर्य एवं दूरदर्शिता
10. अधिगम स्थानान्तरण की योग्यता

यहॉ यह भी उल्लेख करना समीचीन प्रतीत होता है कि प्रधानाध्यापक अपने अध्यापकों को निश्चित गतिविधियों द्वारा बच्चों को आनन्ददायी शिक्षण प्रदान करने तक ही सीमित न रखें। वह शिक्षण को आनन्ददायी बनाने में निम्नलिखित अनेक अन्य क्रियाओं का भी सहारा ले सकते हैं।

- गायन
- खेल
- चित्र बनाना एवं दिखाना
- समस्या पूर्ति या पजल
- पहेली
- नाटक
- भ्रमण
- जिज्ञासा जगाकर
- सृजनात्मक क्रियाएँ आदि
- रोल अथवा भूमिका निर्वहन आदि

गतिविधि प्रश्न :

1. आपके विचार से विद्यालय को आनन्दालय बनाने की आवश्यकता क्यों है?

.....

.....

.....

2. विद्यालय को ''आनन्दालय'' में रूपान्तरित करने में एक प्रधानाध्यापक के व्यक्तिगत एवं पेशेवर गुणों को पृथक–पृथक सूचीबद्ध कीजिए।

.....

.....

.....

प्रधानाध्यापक को अपने विद्यालय में ''आनन्दम कार्यक्रम'' के संचालन के स्व–आकलन में निम्नांकित चैक लिस्ट के माध्यम से सहायता प्राप्त हो सकेगी।

1	क्या मैं अपने विद्यालय को ''आनन्दालय'' बनाने का पक्षधर हूँ?	हॉ	नहीं	आंशिक सहमत
2	क्या मैं आनन्दम् गतिविधियों के उद्देश्यों और परिणामों से अवगत हूँ?	हॉ	नहीं	आंशिक रूप से
3	एक शैक्षिक नेता के रूप में क्या मैं अपने विद्यालय में आनन्दम् वातावरण के सृजन हेतु शिक्षकों एवं छात्रों का मार्गदर्शन करता हूँ?	हॉ	नहीं	आंशिक रूप से
4	क्या मैंने उत्राखण्ड राज्य एस.सी.ई.आर.टी. द्वारा कक्षा 1 से 5/6 से 8 हेतु प्रकाशित ''आनन्दिनी'' मार्गदर्शिका का अध्ययन किया है?	हॉ	नहीं	आंशिक रूप से
5	क्या मेरे विद्यालय में आनन्दम् गतिविधियों को सप्ताह के प्रत्येक दिन स्थान दिया गया है?	हॉ	नहीं	आंशिक रूप से
6	क्या स्टाफ बैठकों/ एस.एम.सी/ पी.टी.ए. बैठकों आदि में आनन्दम् गतिविधियों के संचालन एवं छात्र–छात्राओं में इसके प्रभाव विषयक परिचर्चा की जाती हैं?	हॉ	नहीं	आंशिक रूप से
7	क्या विद्यालय में आनन्दम् गतिविधियों का दिवसवार अथवा साप्ताहिक अभिलेखीकरण किया जा रहा है?	हॉ	नहीं	आंशिक रूप से
8	क्या मैं स्वयं को तकनीकी दृष्टि से अपडेट रखता हूँ जिससे विद्यालय में सीखने का आनन्दमयी वातावरण सृजित हो सके?	हॉ	नहीं	आंशिक रूप से
9	क्या मैं स्वयं नित्य विद्यालय की आनन्दम् गतिविधियों में प्रतिभाग करता हूँ?	हॉ	नहीं	कभी–कभी

10	क्या मैं प्रतिदिन शिक्षकों को आनन्दम् गतिविधियों में स्वयं प्रतिभाग करने हेतु प्रेरित कर पा रहा हूँ?	हॉ	नहीं	आंशिक रूप से
11	क्या विद्यालय में नित्य आनन्दम् गतिविधियों के संचालन से शिक्षण कार्य प्रभावित हो रहा है?	हॉ	नहीं	आंशिक रूप से
12	क्या मैं विद्यालय को शैक्षिक नवाचारों के केन्द्र के रूप में स्थापित करने हेतु शिक्षकों की स्वायत्तता एवं छात्रों के स्व–अनुशासन को बढ़ावा देता हूँ?	हॉ	नहीं	आंशिक रूप से
13	क्या मैं प्रत्येक नेतृत्वकारी गतिविधि में पक्षपातरहित एवं पारदर्शी दृष्टिकोण रख पाने में सफल हो पाता हूँ?	हॉ	नहीं	आंशिक रूप से
14	क्या मेरे विद्यालय में शिक्षकों एवं छात्रों के उत्कृष्ट कार्यों को प्रोत्साहन दिया जाता है?	हॉ	नहीं	कभी–कभी
15	क्या मैं विद्यालय में आनन्दमयी, स्फूर्तिदायक एवं नवाचारी गतिविधियों को बढ़ावा देने के लिए जीवंत और दूरदर्शी टीम बना सकता हूँ?	हॉ	नहीं	आशंकित

गतिविधिः–

(आनन्दम् गतिविधियों के सम्भावित प्रभावों के प्रति स्वयं का दृष्टिकोण)

आप एक विद्यालय नेतृत्वकर्त्ता के रूप में आनन्दम् गतिविधियों के विद्यालयी वातावरण, कक्षा–कक्ष वातावरण एवं विद्यार्थी में परिलक्षित होने वाले सम्भावित प्रभावों से कितने सहमत हैं?
(आपसी चर्चा–परिचर्चा के आधार पर निम्नांकित बिन्दुओं में अपने विचारों को जोडने का प्रयास कीजिए)

1. प्रगतिशील शिक्षण–अधिगम तकनीक का विकास
2. सीखने का सहज वातावरण
3. अनुभवात्मक शिक्षण
4. रचनात्मक शिक्षण अधिगम
5. नैतिक मूल्यों का विकास
6. नवाचारी शिक्षण अधिगम
7. विद्यालय नामांकन में वृद्धि
8. खेल आधारित कौशलों का विकास
9. आत्मविश्वास एवं व्यक्तित्व विकास
10. .....
11. .....
12. .....
13. .....
14. .....
15. .....आदि।

सन्दर्भ–

1- प्रेरणा प्रसून, 2014–15 डाइट–टोंक, राजस्थान।

2- New education policy 2020, Print document

3- NCF 2005, Print document

4- शिक्षकों के लिए आनन्दम् पाठ्यचर्या की हस्तपुस्तिका आनन्दिनी भाग–1 तथा भाग–2

5- ऐसा हो स्कूल हमारा कविता (गिरीश तिवारी 'गिर्दा') https://youtu.be/sMYv_W6M5wQ

6- dreamadream.org